बाप समान फरिश्ता वर्ष

चलो मनाने प्रभु मिलन

25.11.2012

1. **स्वमान** – मैं इस संसार की सबसे भाग्यवान आत्मा हूँ।

- जिससे मिलने स्वयं सृष्टि के नियंता इस धरा पर आते हों...जिसके भाग्य के गुणगान स्वयं भगवान करते हों...जिसका भाग्य स्वयं भाग्यविधाता लिख रहे हों...जिसे सुलाता भी भगवान हो और उठाता भी भगवान हो...जिसे खिलाता भी भगवान हो और जिसके साथ खेलता भी भगवान हो...जिसे शिक्षक बन पढ़ाता भी भगवान हो और माता-पिता बन पालता भी भगवान हो...क्या पूरी सृष्टि में कोई ऐसा महान भाग्यवान हो सकता है ...हमें जिन्हें ये महान् भाग्य प्राप्त हुआ है ,क्या अपने इस भाग्य के नशे में रहते हैं... ?

2. **योगाभ्यास** –

अ. एकांत में स्वयं से बातें करें कि वाह रे मैं...जो मेरे स्वप्न में भी नहीं था, वो अब साकार में मुझे मिल रहा है...सारा संसार जिसे ढूढ रहा है, वो मुझसे मिलने आ रहा है...मैं उससे मिलने से पूर्व क्या तैयारी करूँ... ? जब वो मुझसे मिले तो मैं उसे क्या सौगात दूँ.. ? उसे क्या पसंद है.. ? वो मुझे कैसा देखना चाहेगा ...आदि ?

ब. दादी गुल्जार जी हमेशा कहती हैं कि **'भगवान'** और अपने श्रेष्ठ **'भाग्य'** के गुण सदा गाते रहो। तो इस बार हम भगवान और अपने भाग्य के गीत गाते हुए मग्न रहेंगे।

स. **आह्वान** – हम अभी से प्यारे बापदादा का आह्वान करते रहें कि हे प्राणेश्वर, हम आपसे मिलने को व्याकुल हैं, आप साकार में आकर हमारी इस मीठी व्याकुलता को समाप्त करें...आप से ही हम हैं...आप नहीं तो हम कुछ भी नहीं...आपके बिना मधुबन भी सूना-सूना लगता है...आपकी प्रियतमाएं आपके बिना अधूरी हैं...हम पलक-पावड़े बिछाए आपका इंतजार कर रही हैं...ये गीत गाते हुए कि **अब आन मिलो सजना**...।

3. **धारणा – गुणों व शक्तियों से श्रृंगार**

- जैसे साजन से मिलने के लिए सजनी 16 श्रृंगार करती है...वैसे ही हम आत्मा सजनियाँ अपने परमात्मा साजन से मिलने से पूर्व सर्व गुणों व शक्तियों से अपना श्रृंगार करें...अच्छी तरह दिल दर्पण में देखें कि कहीं कोई अवगुण की कालिख तो चेहरे पर नहीं लगी है... ?

4. **स्वचिंतन** –

- मेरे परमपिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु मुझे कैसा देखना चाहते हैं ?
- मैं वैसा बनने के लिए क्या कर रहा हूँ ?
- अपने श्रेष्ठ भाग्य की सूची बनाएँ।

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! सचमुच यह किसी स्वप्न से कम नहीं कि भगवान का इस धरा पर आगमन होता है और हम उनसे जी भरकर मिलन मनाते हैं, वरदानों से अपनी झोली भरते हैं, गुणों और शक्तियों से अपना श्रृंगार करते हैं...वास्तव में गीता, भागवत् सब अभी ही साकार में अपने स्थूल आँखों से हम देख रहे हैं...कुछ समय के बाद ये सब इतिहास बन जाएँगे...इसलिए अभी जी भरकर भगवान के साथ जीयें...संगम का भरपूर आनंद लें...और सारे कल्प के लिए भरपूर हो जाएँ...।